RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

# नागार्जुन के उपन्यायों में सामाजिक जीवन पर चिन्तन

[1]सीमा [2]डा0 दर्शना

*[1]शोधकर्त्ता, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर*
*[2]शोध निर्देशक, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर*

**ARTICLE DETAILS**

**Article History**
*Published Online:* 13 March2019

**Keywords**
सामाजिक, नागार्जुन

**ABSTRACT**

साहित्य सामाजिक चेतना का प्रतिबिम्ब होता है। यह कथन अंशतः ठीक भी है किन्तु साहित्य को केवल युग सापेक्ष कहना भी ठीक नहीं। यह केवल दर्पण नहीं जिसमें समय की परछाई पड़ती है, बल्कि यह एक क्रियात्मक और निर्माणकारी शक्ति भी है, जिसके द्वारा समाज और युग अपने रूप विधान की प्रेरणा पाता है।[1] साहित्य की यह शक्ति गतिहीन अथवा जड़ नहीं, जो केवल एक समय किसी विशेष परिस्थिति वश जागरूक हो गई, फिर कुछ समय के लिए सुप्त अथवा निष्क्रिय हो गई। वरन् साहित्य काल क्रम में बंधा हुआ एक ऐसा चिरन्तन प्रवाह है, जो मानव सृष्टि के आदिकाल से ही जब से मनुष्य में कलात्मक रचना की प्रतिभा मुखरित हुई, भिन्न–भिन्न रूप में उसके अंदर की कशमकश अभिव्यक्त हुई है।

## प्रस्तावना

नागार्जुन लोकचेता साहित्यकार है। लोक के दुःख–सुख को उन्होंने समझा और अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया। तथ्य है कि मानव इतिहसा की गति में कोई भी प्राणी समाज, प्रकृति एवं मानवीय संबंधों से कट नहीं समता और कोई भी चिंतन समाज का परोक्ष या प्रत्यक्ष आकल्पन किए बिना प्रकट ही नहीं हो सकता इसी कारण नागार्जुन की रचनाओं में तत्कालीन जीवन अपनी सम्पूर्ण विशेषताओं और त्रुटियों के साथ उभर आया है। लोक के साथ उनका यह आत्मीकरण इतना प्रबल और यथार्थ है कि जहां भी उन्होंने अपने युग का चित्रण किया है वहां उनकी पैठ इतनी गहरी सिद्ध हुई कि वे उस युग और समाज के प्रत्येक पक्ष का सजीव चित्र प्रतिबिम्बित कर देते है। नागार्जुन के उपन्यासों में लोक जीवन की पहचान हम उस समय की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों के आलोक में करेंगें।

## साहित्य की समीक्षा

### रतिनाथ की चाची (सन् 1948)

यह नागार्जुन की प्रथम कृति है। रतिनाथ का चरित्र बहुत कुछ अंशों तक लेखक के स्वभावानुभव का प्रतिनिधित्व कारता है। उपन्यास का उद्देश्य समाजगत वैषम्य, स्वार्थपरता, वृत्ति एवं अज्ञानता को यथार्थ परमस्थिति में अंकित करना है। उसमें तरकुलवा की बिकौआ प्रथा, धार्मिक अंधविश्वास, जातिगत चेतना का संचार करता है। 'रतिनाथ की चाची' में जीवनगत बिखराव दृष्टिगोचर होते हैं। परन्तु जीवन की नाना अवस्थाएं उद्घाटित होती हैं।[14] इस चरित्र प्रधान बिखराव भी कहा जा सकता है। उसमें गौरी के वैधव्य की कहानी केन्द्रीय कथा का आभस कराती है। उपन्यास में रतिनाथ तथा गौरी लगभग समान महत्त्व के अधिकारी हैं अर्थात उपन्यासकार की सहानुभूति नारी–जीवन की कारूणिक स्थिति पर केन्द्रित रही है।

नागार्जुन की के उपन्यास में मध्यमवर्ग की सामाजिक समस्याओं का विस्तार से वर्णन हुआ है। इसमें दर्शाया गया है कि विधवा–विवाह, जातिप्रथा की कुलीनता की समस्या, ग्रामीण मध्यवर्ग समाज की जड़ों में कितनी समायी हुई है। 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में नागार्जुन अनमेल विवाह की समस्या को समाज के समक्ष उजागर करते हैं। अनमेल विवाह के कारण कितने मध्यमवर्गीय परिवारों में नारी अशान्तिपूर्ण जीवन को कोसती रहीत है। असमय नारी वैध्यव्य से ग्रसित हो जाती है, असमय नारी वैधव्य को प्रमाणित करने का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसी कारण उसका विधुर देवर जयनाथ अपनी वासना की पूर्ति के लिए आकर्षित होकर नारी का उपयोग छिपकर तो कर सकता है, परन्तु प्रत्यक्ष रूप से साहस के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व से शून्य, मेहनत चोर, आवारा, कृतघ्न, कठोर तथा झूठे के रूप में लेखक ने अंकित किया है। गौरी अपनी माँ के यहाँ जाकर पाप की कथा सुनाकर बोझ मुक्त हो जाती है। लेकिन उसका पुत्र उमानाथ मां की कथा सुनकर उसे मारता है और गाली देता है। गौरी अपमान और तिरस्कृत जीवन को सहन करती है। गौरी के जीवन की आशा–ज्योति रतिनाथ है जो उसे देवत्व की श्रेणी में बिठाता है चाची की मृत्यु के उपरान्त उसकी अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करके लौटते समय उसके शील–शालीनता के बारे में सोचता है–अमावस की उस रात को वह कौन थी चाची? एक घनी और अँधेरी छाया में तुम्हारी बिस्तरे की तरफ बढ़ गई। वह कथा थी, सदा के लिए तुम्हारी सिर पर कलंक का टीका लगा गई। वह कौन थी, चाची शील और शालीनता के प्रति में तुमने उस धूर्त का नाम बतला क्यो नहीं दिया? इस प्रकार उपन्यास की नायिका गौरी को प्रस्तुत किया है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

**बलचनमा (सन् 1952)**

यह नागार्जुन का द्वितीय सामाजिक उपन्यास है। उपन्यासकार ने इसमें दरभंगा के समीपवर्ती के अंचल की कथा को आधार बनाकर सामन्ती जमींदारी प्रथा में घिसते हुए ग्रामीण ईमानदार श्रमिक किसानों के प्रतिनिधि पात्र 'बलचनमा' के सम्पूर्ण चरित्र को प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। डॉ0 बेचन शर्मा 'उग्र' ने प्रस्तुत उपन्यास की श्रेष्ठता को निम्नवत् व्यक्त किया है:

'यदि नागार्जुन ने बलचनमा को लिखकर कुछ और न होता तो भी विश्व के कथाकारों की पंक्ति में आ जाते? अतः उग्र ने बलचनमा को 'चरित्र प्रधान महाकाव्य' की संज्ञा से रेखांकित किया है।'[15]

इस उपन्यास में लेखक का उद्देश्य 'बलचनमा' के जीवन–संघर्ष के चित्रण द्वारा उस समाजवादी चेतना को भी तीव्र करना है, जो साधनहीन, स्वधिकार वंचित किसान को अन्याय तथा अत्याचार के प्रति विद्रोह के लिए जाग्रत कर रही है। नागार्जुन, ने 'बलचनमा' को विभिन्न परिस्थितियों में रखकर जमींदारों, राजनीतिक मध्यमवर्गीय युवकों के स्वभाव, संस्कार, स्वार्थ, संघर्ष और त्याग के विभिन्न चित्र प्रस्तुत किए है। सुराजी `ताओं के खान–पान, रहन–सहन, व्यवहार–बर्ताव का वर्णन 'बलचनमा' में व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर रेखांकित किया गया है।

वर्ग–वैषम्य, शोषण, बुजुर्वा, मनोवृत्ति पर बलचनमा के माध्यम से उपन्यासकार ने कठोर व्यंग्य किए है। उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के द्वारा निम्न वर्ग के प्रति जो अमानवीय व्यवहार एवं शोषण एवं शोषण किया जाता है, उसका खुलासा वर्णन बलचनमा में किया गया है।

उपन्यास में फूलबाबू, महेन बाबू, राजाबाबू, आदि महत्त्वपूर्ण मध्यमवर्गीय पात्र हैं। फूलबाबू, गाँधीवादी से प्रभावित है तथा बलचनमा कांग्रेस तथा सोशलिष्ट एवं स्वराज की भावना से प्रेरित है। जब फूल बाबू नमक अपन्दोलन में कई बार जेल यात्राएं करते है, परन्तु वे अपने निजी स्वार्थ को नहीं भूलते तो वे फूलबाबू के बारे में कहता है– 'सन् तीस–बत्तीस का जमाना था, गांधी के हुकुम में बाबू लोग गिरफ्तार हो रहे थे। हमारे फूल बाबू को महात्मा गाँधी की हवा लगी थी। उनके मित्र महेनबाबू कांग्रसी है और वे भी स्वराज्य के लिए प्रयत्नशील हैं। बलचनमा के पुछने पर स्वराज्य से क्या होगा? महेन बाबू उसे बताते हैं कि स्वराज्य होने पर सबके दिन लौटेंगे, सबका भाग्य चमकेगा, हमारा भी तुम्हार भी। वह भी उसी आशा में गांव मं आता है। देखता है कि गांव में कोई अन्तर नहीं आया है। कांग्रेसी कार्यकर्त्ता अपने निजी स्वार्थों में लगे हुए हैं। जिनमें फूलबाबू अग्रणी हैं वे रिलीफ फण्ड को बेईमानी से आपस में बाँट लेते हैं।

**सामाजिक जीवन एवं चिन्तन**

हिन्दु समाज की सबसे बड़ी विशेषता जात–पात बताई जाती है। समस्त जातियाँ लगभग तीन हजार वर्गो में विभक्त है जिनका खान–पान और विवाह अपने ही वर्गो तक सीमित रहा है। ब्रिटिश शासन के प्रारम्भिक काल में जाति–भेद की व्यवस्था बड़ी कठोर थी। एक जाति का व्यक्ति न केवल खान पान और विवाह के विषय में जातीय बन्धनों में जकड़ा हुआ था, वह अपना पैतृक पेश भी नहीं छोड़ सकता था। खान–पान में ब्राह्मणों के कुछ वर्ग शुद्धि का इतना अधिक विचार करते थे कि एक ही उपजाति के व्यक्ति एक दूसरे के हाथ का बना भोजन भी नहीं खाते थे। यही बात "तीन कनौजी तेरह चुल्हे" आदि कहावतों में प्रतिबिम्बित हुई है। स्वामी विवेकानंद को इस परिस्थिति से खीझकर कहना पड़ता था कि हमारा धर्म रसोईघर में है। हमारा ईश्वर खाना बनाने के बर्तन हैं– हमारा सिद्धांत है मुझे न छुओ मै पवित्र हूँ।[2] शिक्षित व्यक्तियों द्वारा सर्वप्रथम खान–पान और विदेश यात्रा के बन्धन तोड़े गए। पिछली शती के अंत में कांग्रेस के साथ होने वाली समाज सुधार परिषदों की समाप्ति अंतर्जातीय भोजों के साथ होती थी। साधारण जनता में रेलों ने इस विचार को शिथिल करने में बड़ी सहायता की है, क्योंकि इनमें छूआछूत और शुद्धि की मर्यादाओं का पालन करना बड़ा कठिन हैं। होटल भी इसमें बहुत सहायक सिद्ध हुए है।

जाति भेद का सबसे जबर्दस्त बंधन विवाह विषयक है इससे समाज को बड़ी हानियां हो रहीं है। चुनाव का क्षेत्र सीमित होने से दहेज बहुत अधिक मागा जाता है, इसलिए या तो विवाह कठिनाई से ही होते है या लड़कियां अविवाहित रह जाती हैं अथवा बेमेल विवाह होते हैं।

जाति भेद की श्रृंखलाएं पश्चिमी शिक्षा, व्यक्ति स्वातंत्र, समानता पर बल देने वाली विचारधारा एवं नई आर्थिक परिस्थितियों से टूट रही हैं। पेशे का बंधन, जो पहले प्रायः नीची के साथ था लगभग समाप्त हो रहा है क्योंकि पुराने पेशों की अपेक्षा कारखानों में काम करने से उन्हें अधिक आय होती है दूसरी और ब्राह्मण आदि उच्च वर्णो के व्यक्ति आर्थिक परिस्थितियों से बाध्य होकर व्यापारी, दुकानदार इत्यादि बन रहे हैं। समूचे देश में एक कानून लागू होने व समानता के सिद्धान्त का पालन होने से भी पुराना भेदभाव समाप्त हो रहा है। स्वतंत्रता पाने के बाद यह अनुभव किया जा रहा है कि सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए जाति भेद को मिटाना अनिवार्य है।

सामाजिक क्षेत्र में आधुनिक भारत के दो बड़े क्रान्तिकारी सुधार हरिजनोंद्वार और महिलाओं की आश्चर्यजनक उन्नति है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

हिन्दू समाज ने कई सौ वर्ष तक नीच जातियों और स्त्रियों के साथ क्रूर व्यवहार किया था व उनका घोर उत्पीड़न किया था। अब उन्हें मध्ययुगीनहीन स्थिति से उठाने के प्रयत्न किये जा रहे है।

ब्रिटिश शासन के प्रारम्भ में नीच जातियों के करोड़ों हिंदू अछूत माने जाते थे इनके साथ असहनीय और अकथनीय अत्याचार होते थे। दक्षिण में यह प्रथा उग्रतम रूप में थी। वहां उच्च जातियों नीच जातियों के स्पर्श ही नहीं, छाय तक से अपवित्र हो जाती थी। "कोचीन की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार ब्राह्मण नायर के स्पर्श से दूषित समझे जाते थे किन्तु कम्मलन (राज, बड़ई, लूहार, चमार) ब्रह्ममणों को 24 फीट से अपवित्र कर देता था, ताड़ी निकालने वाला 36 फीट से, चेरूमत कृषक 48 फीट से और परेमन (गोमांस – भक्षक परिहा) 64 फीट से। अभागे अछूत शहरों से बाहर रहते थे, मन्दिरों में इनका प्रवेश वर्जित था, क्योंकि सब भक्तों का उद्धार करने वाले देवता भी इनके दर्शन से दूषित हो जाते थे। ये कुंओं से पानी नहीं भर सकते थे। अस्पतालों व पाठशालाओं का लाभ नहीं उठा सकते थे, वे उच्च वर्ग के बेगार आदि के अत्याचार सहते हुए बड़े दुख से अपने नारकीय जीवन की घड़ियां गिनते थे।"[3]

अछूतोद्धार के लिए सर्वप्रथम प्रयास आर्य समाज ने किया ब्रह्मसमाज और प्रार्थना समाज ने भी इस क्षेत्र में काम किया है। आज़ादी के पश्चात् कांग्रेसी सरकारों के स्थापित हो जाने के बाद से हरिजनों की उन्नति, शिक्षा व सामाजिक बाधाओं को दूर करने की और अधिक ध्यान दिय गया है। प्रायः सभी प्रान्तों में अस्पृश्यता निवारक कानून पास हो चुके हैं। इनके अनुसार अस्पृश्यता कानूनी तौर पर दण्डनीय अपराध बना दिया गया है। हरिजन अभी तक पुरानी सामाजिक प्रथा के अनुसार सार्वजनिक जलाशयों, मन्दिरों व शिक्षा संस्थाओं का अछूत होने से उपयोग नहीं कर सकते थे। नए कानून द्वारा अछूतों को ऊँची जातियों के बराबर समझते हुए उपर्युक्त सभी सामाजिक प्रतिबंध अवैध एवं दण्डनीय अपराध बना दिया गए हैं। शिक्षा की दृष्टि से हरिजन जातियां बहुत पिछड़ी हुई हैं। उनमें शिक्षा प्रसारका विशेष यत्न किया जा रहा है। हरिजन विद्यार्थियों के लिए शिक्षण संस्थओं में पर्याप्त स्थान सुरक्षित रखे जाते है। उनके लिए प्रथम श्रेणी से विद्यालय की उच्चतम कक्षा तक निःशुल्क शिक्षा पाने की व्यवस्था है। हरिजनों के अतिरिक्त समाज में स्त्रियों की दशा अत्यन्त शोचनीय और गिरी हुई थी। नारियों को समाज में अत्यंत तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था। उन्हें पैर की जूती समझा जाता था। स्त्री समाज को शिक्षा से वंचित एवं जानबूझकर पर्दे में रखा जाता था। पुरूषों की अपेक्षा उनके दाम्पत्य एवं साम्पत्तिक अधिकार नाममात्र को ही थे। किन्तु अब नारियों में जागृति आई है व उन्होंने सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान अधिकार व स्थिति प्राप्त कर ली है।

**उपसंहार**

अतः साहित्य युग चेतना का उद्बोधक और प्रेरक शक्ति का रूप है। अभिप्राय यह है कि कवि परिस्थिति को अपनी रचनाओं में प्रतिबिम्बित करता है। परन्तु इसके साथ यह भी उतना ही सत्य है कि वह अपनी समसामयिक परिस्थितियों की प्रतिक्रिया स्वरूप बहुत कुछ उन्हें परिष्कृत करने और बनाने का कार्य भी कारता है। वह कवि नहीं जो अपनी स्थिति से जन्म और जीवन ग्रहण करके अपने भावों और विचारों के द्वारा वायुमंडल को सुरभित विकसित व प्रफुल्लिा न कर दे। एक और वह युग का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरी ओर वह युग का निर्माण भी करता है, यही सभी महान कलाकारों के संबंध में सत्य हैं।

शिक्षा का अप्रसार अथवा देश की जनसंख्या के एक बहुत बड़े भाग का अशिक्षित रहना सभी सामाजिक समस्याओं का मूल कहा जा सकता है। अज्ञानता वश व्यक्ति स्वंय तो किसी भी प्रकार का कोई निर्णय लेने में असमर्थ होता ही है साथ वह दूसरों के शोषण का भी शिकार हो जाता है। अशिक्षा के कारण ही वह परम्परा से चली आ रही कुप्रथाओं का विरोध करने की या उनका बहिष्कार करने की नैतिक शक्ति स्वंय के भीतर नहीं जुटा पाता। हमारे देश में शिक्षा अब सुलभ करा दी गई है। गांव–गांव में अब विद्यालय खोले गये हैं। शिक्षा सामाजिक चेतना जागृति और विकास की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख व सशक्त माध्यम हैं।

**संदर्भ**

1. डॉ0 प्रकाश चन्द्र भट्ट, नागार्जुन जीवन और साहित्य, पृष्ठ 25
2. फिलिप लारेंज स., इन्साइक्लोपीडिया ऑफ साइक्लोजी, पृष्ठ 456
3. के.के. सक्सेना सामान्य मनोविज्ञान, पृष्ठ 100
4. डॉ0 प्रकाश चन्द्र भट्ट, नागार्जुन, जीवन और साहित्य, पृष्ठ 38
5. डॉ0 शिवकुमार मिश्र, साहित्य और सामाजिक संदर्भ, पृष्ठ 124
6. डॉ0 प्रकाश चन्द्र भट्ट, नागार्जुन, जीवन और साहित्य, पृष्ठ 38
7. मोहन राकेश (सम्पादक), आइने के सामने, पृष्ठ 25
8. डॉ. प्रकाश चन्द्र भट्ट, नागार्जुन, जीवन साहित्य पृष्ठ 38
9. नागार्जुन नई पौध पृ. 31
10. नागार्जुन रतिनाथ की चाची, पृष्ठ 68

RRIJM 2015, All Rights Reserved